कृष्ण कथा

एक बार परमात्मा श्रीकृष्ण के दर्शनार्थ मुनिश्रेष्ठ दुर्वासा ब्रजधाम में पधारे। परम रमणीय यमुना-तट के महावन के समीप दूर से ही दुर्वासा ने प्रभु को देखा कि श्रीमान् मदन-गोपाल पावन तट पर धूलधूसरित ग्वालबालों सहित परस्पर मल्लयुद्ध कर मनोहर क्रीड़ा कर रहे हैं। उनका सर्वांग धूलधूसरित, सारे केश बिखरे हुए एवं स्वयं नंगे बदन हैं। गोप-बालकों सहित दौड़ते हुए श्रीहरि को देखकर मुनि दुर्वासा विस्मित हो गये। उन्होंने कहा कि अगर ये वास्तव में ईश्वर हैं तो जमीन पर गोप-बालकों के साथ क्यों धूलधूसरित हो रहें हैं? अतएव ये नंद-पुत्र परमब्रह्म श्रीकृष्ण नहीं हैं। महामुनि दुर्वासा के उस स्थान पर मोह ग्रस्त होने पर श्रीकृष्ण क्रीड़ा करते हुए उनकी गोद में आकर उपविष्ट हो गये। सिंह शावक सदृश दृष्टि सम्पन्न श्रीकृष्ण उनकी गोद से उतर कर मधुर हास्य युक्त वाणी उच्चारित करते हुए उनके सम्मुख उपस्थित हुए। श्रीकृष्ण के हँसते हुए मुख में श्वास योग के द्वारा प्रविष्ट होकर दुर्वासा ने जन-शून्य आश्रय स्वरुप एक अन्य महालोक का अवलोकन किया। वे उस स्थान पर वन में भ्रमण करते हुए कहने लगे, मैं यह कहाँ आ गया हूँ! उसी समय एक अजगर उन महामुनि को निगल गया। दुर्वासा ने उस जगह सारे लोक एवं पाताल सहित एक अन्य ब्रह्माण्ड का दर्शन किया। उन्होंने वहाँ विभिन्न द्वीप समूहों में भ्रमण करते-करते एक श्वेत पर्वत पर रुककर परमात्मा का भजन करते हुए सौ-करोड़ वर्षों तक तपस्या की। तब नैमित्तिक नामक प्रलय काल के उपस्थित होने से विश्व ने भयंकर रुप धारण कर लिया। सागर ने सारी पृथ्वी को जल मग्न कर दिया। दुर्वासा उस जल में बहते जा रहे थे पर उसका अन्त नहीं पा सके। क्रमशः सहस्त्र युग व्यतीत होने पर उनकी स्मृति विलुप्त हो गयी एवं जल के भीतर प्रवेश करके उसमें विचरण करते हुए एक अन्य ब्रह्माण्ड का दर्शन किया। वे उस ब्रह्माण्ड के छिद्र में प्रविष्ट कर दिव्य सृष्टि का दर्शन करने लगे। मुनि ब्रह्मा के आयुष्काल पर्यन्त ब्रह्माण्ड के ऊर्ध्वस्थ सारे लोकों के भ्रमण के क्रम में एक छिद्र देखा, एवं हरि का स्मरण करते हुए उसमें प्रविष्ट हुए। तत्पश्चात् उस ब्रह्माण्ड से वहिर्गत होकर एक जलराशि का दर्शन किया। उस जल में उन्होंने करोड़ों की संख्या में ब्रह्माण्डों का अवलोकन किया। पुनः दुर्वासा ने उस जल को देखते-देखते, विरजा नदी का दर्शन किया एवं उस विरजा नदी को पारकर साक्षात गोलोक में प्रविष्ट हो गये। वहाँ पर उन्होंने वृन्दावन, गोवर्धन और शुभ यमुनातट का दर्शन कर प्रसन्नचित्त होकर निकुंज में प्रवेश किया। वह निकुंज अनेक गोप-गोपियों के दलों एवं करोड़ों गायों से आवृत था। उसमें असंख्य कोटि सूर्य सम् ज्योतिर्मय मण्डल विद्यमान था, दुर्वासा ने उस मण्डल के मध्य एक दिव्य लक्षदल पद्म पर विराजमान गोलोकपति, असंख्य ब्रह्माण्डपति, राधापति हरि, परिपूर्णतम् पुरुषोत्तम, साक्षात श्रीकृष्ण का दर्शन किया। श्रीकृष्ण उस समय मुस्कुरा रहे थे। दुर्वासा उनके मुख में प्रविष्ट हुए एवं पुनः उसी मुख से बाहर आकर देखते हैं कि शिशु नन्द-नन्दन कृष्ण यमुना के पूर्ण रमणीय तट पर गोपों सहित विचरण कर रहे हैं। तब ऋषि दुर्वासा उनको 'परब्रह्म कृष्ण' कहकर सम्बोधित करते हुए नन्द-नन्दन को बार-बार प्रणाम करके हाथ जोड़कर कहने लगे बालक नवीन कमलतुल्य, विशाल लोचन, सजल जलद कान्ति मनज्ञ, मन्दहास्यकारी, मधुर सुन्दर मंदगामी श्री नन्द नन्दन को मन ही मन मैं प्रणाम करता हूँ। शब्दायमान मंजीर एवं नुपूरयुक्त उज्ज्वल रत्न कांचिधारी संगथित सिंहनख युक्तहार भूषित दुखहारक दृष्टिकारी, मसिविन्दुशोभित यमुना तट पर बाल क्रीड़ारत श्रीकृष्ण की मैं वन्दना करता हूँ। जिनके पुर्णेन्दुसदृश सुन्दर मुखमण्डल पर घुंघराले बाल नवीन मेघों की तरह नील प्रभा बिखेरते हुए शोभायमान हैं, जो आनतमस्तक कुमुदबदन नन्द-नन्दन को बलराम सहित बारंबार मैं प्रणाम करता हूँ। मुनिश्रेष्ठ दुर्वासा इस प्रकार श्रीकृष्ण को प्रणाम करके कृष्णनाम का इस प्रकार जप करते करते उत्तम बदरिकाश्रम गमन किये।

लीलासंगीयों के साथ क्रिड़ारत श्रीकृष्ण

–हिन्दी अनुवादः मातृचरणाश्रित श्रीविमलानंद

("गर्ग संहिता" से उद्धृत)